प्रभावी कहानी लेखन के चार आयाम और 20 सूत्र

सामाजिक कार्यकर्ता के सम्बन्ध में कहानी लेखन का अर्थ एक ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें जमीनी अनुभवों को रचनात्मक और रोचक तरीके से पेश किया जाता है साथ ही कहानी वास्तविक समस्या और वास्तविक पहल पर आधारित होती है। इसमें हम समाज और सामाजिक मसलों को लेकर सामजिक-नागरिक संस्थाओं के व्यापक नजरिये को भी प्रस्तुत करते हैं। कहानी लेखन एक सधी हुयी प्रक्रिया है जिसे हमने चार आयाम और बीस सूत्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

तैयारी के आयाम

विषय की पहचान

- वह बात जो बताने लायक हो और सबको जाननी चाहिए।
- नयापन - यानी जिसमें कोई नई सीख और नया नज़रिया हो।
- जिसमें किसी स्थिति में आए बदलाव का चित्रण हो।

विषय का अध्ययन

- विषय के सामाजिक आयाम क्या हैं?
- संवैधानिक, कानूनी और नीतिगत आयाम क्या हैं?
- विषय की नवीनतम स्थिति क्या है?

विषय की व्यापकता या विस्तार

- विषय के प्रभाव का दायरा क्या है?
- तात्कालिक और दीर्घकालिक प्रभाव क्या हैं?

पात्रों की पहचान

- जो प्रभावित हैं।
- जो निराकरण कर सकते हैं।
- जिन्होंने पहल की है।
- जो विषय में समस्या/हल का कारण बनते हैं।
- जो योजना बनाते और उसका क्रियान्वयन करते हैं।

प्रासंगिकता

- जो भी विषय प्रस्तुत किया गया है, उसकी वर्तमान प्रासंगिकता और महत्व के बारे में स्पष्टता।

संरचना के आयाम

विषय/समस्या - क्या?

कहां और कब?

- कहानी के केंद्रीय विषय को समझना।
- प्रभाव क्या-कितना है?
- विषय/समस्या/घटना के स्थान और समय की जानकारी।

विषय/समस्या से कौन प्रभावित है?

- प्रभावित समुदाय का विवरण - उम्र, जाति, लिंग आदि।

विषय/समस्या क्यों?

- स्थानीय-व्यापक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नीतिगत और सांस्कृतिक कारणों का विवरण।
- यह उत्तर ढूंढना कि जो भी हुआ, वह क्यों हुआ?

विषय/समस्या कैसे?

- समस्या कैसे उत्पन्न हुई और वह विस्तृत कैसे हुई?
- प्रक्रिया का विस्तृत विवरण।
- किसने क्या भूमिका निभाई?

कहानी का ढांचा

- सबसे पहले महत्वपूर्ण बात यानी क्या हुआ, कहां हुआ और परिणाम क्या है?
- इसके बाद क्यों हुआ और कैसे हुआ का विवरण दें।

प्रभाव के आयाम

प्रश्न और पूरक प्रश्न पूछना

- सपाट प्रश्नों से प्रभावी सामाजिक कहानी नहीं लिखी जा सकती है। यह सोचिए कि हमारे पास कितने प्रश्न हैं और उनके पूरक प्रश्न कितने हैं?

संदेश की स्पष्टता

- शुरुआत से ही बिलकुल स्पष्ट होना चाहिए की कहानी के माध्यम से क्या संदेश देना चाहते है?

परिस्थितियों का चित्रण

- तथ्यों और आंकड़ों को विस्तार देने के लिए गहराई से बातों को सुनना जरूरी होता है।
- जो परिस्थितियां हैं, उनका अवलोकन करना और उन्हें महसूस करके कहानी में प्रस्तुत करना।

संवेदनाएं और भावनाएं

- कहानी में संवेदनाओं के होने का प्रभाव यह होता है कि उससे अन्य लोग जुड़ जाते हैं।
- जो लोग/समूह विषय से प्रभावित हैं, उनकी भावनाओं की ज्यों की त्यों प्रस्तुति।

विषय से संबंधित पक्षों की बात

- किसी भी विषय या समस्या से संबंधित अलग-अलग पक्ष से बात करना और उन्हें कहानी में शामिल करना।

मूलभूत मानक

कहानी की आचार संहिता

- गरिमा, बंधुता, परस्परता और विश्वासों पर आघात न करना।
- कहानी के लिए सहमति और अनुमति लेना।
- व्यक्ति की गरिमा और सुरक्षा के मद्देनज़र उनकी पहचान को छिपाना।

जिनकी कहानी, उनकी जुबानी

- विषय/समस्या से जो लोग/समुदाय प्रभावित हैं, उनकी बातों को केंद्र में रखा जाना।
- वक्तव्यों को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना।

तथ्य आधारित होना

- कहानी में परिस्थिति, प्रभाव, कारणों आदि को तथ्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाना।
- तथ्यों और सूचनाओं के स्त्रोतों का उल्लेख करना।

पूर्वाग्रह से मुक्त होना

- विषय या समस्या पर बदलाव की पहल करते हुए हम संवेदनशील हो जाते हैं, फिर भी किसी व्यक्ति या समुदाय के प्रति पूर्वाग्रह से सचेत रहना।

सामान्यीकरण और अतिरेक नहीं

- विषय से संबंधित पहलुओं या किसी ख़ास स्थिति का सामान्यीकरण न करना और किसी भी अतिरेक से बचना।

रणनीतिक संचार केंद्र (विकास संवाद का उपक्रम)
ए-5, आयकर कॉलोनी, जी-3, गुलमोहर कॉलोनी, बावड़िया कलां, भोपाल (म.प्र.)-462039
फोन नं. : 0755-4252789, ईमेल : communication@vssmp.org / www.vssmp.org